B.A. Part – II Hons – Philosophy
IIIrd Paper – Ethics

Date ____ Page ____

"Explain the methods of Ethics."
"नीतिशास्त्र की विधियों की व्याख्या कीजिए।"

xox

नीतिशास्त्र की पद्धति का अर्थ है – यह प्रक्रिया, मार्ग, विधि जिसके द्वारा नैतिक ज्ञान प्राप्त किया जाता है। नैतिक ज्ञान का अर्थ नैतिक गुणों, मूल्यों और नियमों का ज्ञान है। सामान्यतः नीतिशास्त्र की दो प्रणालियाँ हैं – अनपेक्षात्मक और अपेक्षात्मक। अनपेक्षात्मक प्रणाली के समर्थक वे हैं जो नीति के नियमों को अटल और सनातन मानते हैं जो नैतिक मूल्यों को पुरुष, परिस्थिति और कला से परे मानते हैं। अपेक्षात्मक प्रणाली के समर्थक वे हैं जो नैतिक नियमों को परिवर्तनशील मानते हैं। इनके अनुसार नैतिक नियम पुरुष, परिस्थिति और काल के सापेक्ष कहे जाते हैं। जो नीतिशास्त्री को सामाजिक आदतों का विवेचना व्यक्ति के आवेगों का अध्ययन या नैतिक प्रत्ययों में विश्लेषण मानते हैं, उनकी प्रणाली अपेक्षात्मक होती है इसके विपरीत जो नीतिशास्त्री को एक न्याय या कर्तव्य का अध्ययन मानते हैं उनकी प्रणाली अनपेक्षात्मक है। पुनः जो विचारक नीतिशास्त्र को यथार्थवादी विज्ञानमात्र मानते हैं उनकी पद्धति अपेक्षात्मक है और जो लोग इसे आदर्शवादी विज्ञान मानते हैं, उनकी पद्धति अनपेक्षात्मक है। अनपेक्षात्मक पद्धति मूलतः निगमनात्मक है और अपेक्षात्मक पद्धति आगमनात्मक। अनपेक्षात्मक प्रणाली और अपेक्षात्मक प्रणाली से मूल्यों को क्रमशः निरपेक्षता और सापेक्षता प्रमाणित होती है। दूसरे शब्दों में मूल्यों की निरपेक्षता और सापेक्षता में उनके विवेचन की पद्धति क्रमशः अनपेक्षात्मक और अपेक्षात्मक सिद्ध होती है। नीतिशास्त्र की पद्धति और नीतिशास्त्र में इतना घनिष्ठ संबंध है कि सिजविक, मार्टिन्यू जैसे कुछ विद्वानों ने नीतिशास्त्र की पद्धति को नीतिशास्त्र में कोई भेद नहीं किया है:—

(a) मनोवैज्ञानिक पद्धति – इस पद्धति के मनुष्य की आकांक्षा का पता लगाकर उसके आचरण का लक्ष्य निर्धारित किया जाता है इसे आगमनात्मक विधि भी कहते हैं। इस पद्धति के आधार पर आचार-संबंधी कई विचार पाए जाते हैं।

सुखवादी – मनोवैज्ञानिक विधि का सहारा लेकर सिद्ध करते हैं कि सुख की प्राप्ति ही जीवन का प्रधान लक्ष्य है और इसी के लिए व्यक्ति के सभी आचरण होते हैं। जिस आचरण से सुख मिले वह धार्मिक और जिससे दुःख मिले वह अधार्मिक है।

अंतःप्रज्ञा – के अनुसार अंतःप्रज्ञा नैतिक और अनैतिक आचरण का निर्णायक है मनुष्य में एक ऐसी विवेकबुद्धि या अंतःप्रज्ञा है जो तत्काल किसी आचरण को नैतिक-अनैतिक घोषित कर देती है।

(b) अमनोवैज्ञानिक पद्धति – इस विधि से विश्व के संबंध में किसी दृष्टिकोण पर विचारकर उसके आधार पर मानवजीवन का आदर्श या लक्ष्य निर्धारित किया जाता है। इसे निगमन-विधि भी कहा जाता है। इस विधि में अनुभव के द्वारा नहीं बल्कि बुद्धि के द्वारा आदर्श का ज्ञान मिलता है इसलिए इसे अनुमानात्मक रीति भी कहते हैं इस विधि को प्रयोजनात्मक प्रणाली भी कहते हैं क्योंकि मनुष्य के प्रयोजन के आधार पर ही उसका आदर्श निर्धारित होता है। प्राकृतिक/तात्विक

(c) अमनोवैज्ञानिक पद्धति (प्राकृतिक) – इस पद्धति के आधार पर संसार प्राकृतिक शक्तियों के सम्मिश्रण का परिणाम है प्रकृति और प्राकृतिक नियम विश्व की व्याख्या के लिए पर्याप्त है। ईश्वर की कल्पना निरर्थक है विश्व की उत्पत्ति प्राकृतिक ढंग पर हुई है और इसका विकास भी प्राकृतिक रूप से होता है शरीर और आत्मा दोनों ही नश्वर हैं

इसलिए रीति के अनुसार सुख की प्राप्ति ही जीवन का आदर्श है।

(b) तात्विक पद्धति :— अनेक विचारकों ने अपने तत्व संबंधी विचारों के आधार पर नैतिक जीवन का आदर्श निर्धारित किया है। हीगेल एक ही तत्व परमात्मा मानते हैं। अन्य आत्माएँ इसी एक तत्व के प्रतिरूप हैं। मानव-आत्मा अपूर्ण है इसलिए पूर्णता की प्राप्ति ही जीवन का लक्ष्य होना चाहिए।

वास्तविक पद्धति :— मनोवैज्ञानिक और अमनोवैज्ञानिक दोनों विधियों के आधार पर ही जीवन का सच्चा आदर्श निर्धारित किया जा सकता है। लक्ष्य ऐसा होना चाहिए जिसे प्राप्त किया जा सके। व्यक्ति के आचरण की परीक्षा के आधार पर ही ऐसा जाना जा सकता है। इसके लिए मनोवैज्ञानिक रीति आवश्यक है। मनुष्य के आचरण के उद्देश्य को वास्तविक आदर्श नहीं कहा जा सकता। हमें क्या करना चाहिए, इस पर विचार करना अनिवार्य है। इसके लिए अमनोवैज्ञानिक पद्धति अपनाना आवश्यक है। इस प्रकार नीतिशास्त्र में मनोवैज्ञानिक रीति और अमनोवैज्ञानिक रीति। परीक्षा और विचार दोनों आवश्यक हैं।

Dr. Ajay Kumar Sinha
Deptt of Philosophy
Mahila College Dalmianagar
Dehri - on Sone | Rohtas